Bhajan

16

गुरुदेव मेरी नैया उस पार लगा देना

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

गुरुदेव मेरी नैया उस पार लगा देना,
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना॥
गुरुदेव मेरी नैया . . .

छल बल के साथ माया घेरे जो मुझे आकर,
तुम देखते न रहना, झट आके बचा लेना॥
अब तक तो निभाया है . . .

सम्भव है झंझटों में मैं तुमको भूल जाऊँ,
हे नाथ दया कर के, मुझको न भुला देना॥
अब तक तो निभाया है . . .

तुम देव मैं पुजारी तुम इष्ट मैं उपासक,
चरणों में पड़ा तेरे हे नाथ निभा लेना॥
अब तक तो निभाया है . . .

तुम्हरी कृपा से हमने मानुष जनम है पाया,
जब प्राण तन से निकले अपने में समा लेना॥
अब तक तो निभाया है . . .

दु:खियों के संकट जो दूर करे

दु:खियों के संकट जो दूर करे,
जिसने लिया उसका नाम।
बोलो श्रीराम ही राम,
जपो श्रीराम ही राम॥

तुम बिन जग में कौन हमारा,
दु:ख में सुख में एक सहारा।
तुमसे जग में है उजियारा।
जब तक इस तन में ये प्राण रहे,
हो बस तुम्हारा ही नाम॥
बोलो श्रीराम ही राम . . .

तेरी शरण में जो कोई आवे,
जन्म सफल उसका हो जाये।
जग बन्धन उसको ना सुहावे।
अंतर में आतम की जोत जगे,
जिस ने लिया उसका नाम॥
बोलो श्रीराम ही राम . . .

जो भी उसकी शरण में आया,
मन वान्छित फल उसने ही पाया।
निर्मल हो गई उसकी काया।
भक्तों के कष्टों को दूर करे।
जिस ने लिया उसका नाम॥
बोलो श्रीराम ही राम . . .

<u>तेरा जीवन है निस्तार राम के भजन बिना</u>

तेरा जीवन है निस्तार, राम के भजन बिना।

चार घड़ी को बजता है बस, जीवन का ये राग।
कयूं खोया मन इन्द्रजाल में, जाग सके तो जाग।
तेरी जीत बनेगी हार, राम के भजन बिना॥
तेरा जीवन है निस्तार . . .

आज बना सब अपना अपना, कौन यहां पर मीत।
राम नाम की नौका चढ़ के, भवसागर को जीत।
तू डूबेगा मझधार, राम के भजन बिना॥
तेरा जीवन है निस्तार . . .

बहुत यतन से काया सींची, जैसे कोमल फूल।
काल बली का क्यूँकर आया, अंत धूल की धूल।
तेरा जल तन ढॅरीसार, राम के भजन बिना॥
तेरा जीवन है निस्तार . . .

राम रंग लागा हरि रंग लागा

लाली मेरे लाल की जित देखूं तित लाल,
लाली देखण मैं गई खुद भी हो गई लाल॥

राम रंग लागा हरि रंग लागा मोहे,
मनवा का भरम सब भागा॥

जब मैं रहती अनहत वाणी, तब पिया सुख हो ना बोले।
जब मैं भईला राख बराबर, साहिब अंतर बोले।
सहजरिया सुख देखे ॥
राम रंग लागा . . .

रोम रोम प्यारे की रतियाँ, प्रेम से प्याला पीजै।
सांचे मन से साहिब मेरे, झूठे मन से भागा॥
राम रंग लागा . . .

हरि जन से हरि ऐसे मिलते, कंचन संग सुहागा।
लोक लाज कुल की मर्यादा, तोड़ दिया सब धागा।
कहत कबीर सुनो भई साधो, भाग हमारा जागा॥
राम रंग लागा . . .

मैं तो उन संतो का दास

मैं तो उन संतो का दास, जिन्होनें मन मार लिया।

मन मारा तन वश किया, सभी भरम भये दूर।
बाहर से कछु दीसत नाहीं, अन्दर बरसे नूर॥
मैं तो उन संतो का दास . . .

आपा मार जगत में बैठे, नहीं किसी से काम।
उनमें तो कछु अंतर नाहीं, संत कहो चाहे राम॥
मैं तो उन संतो का दास . . .

प्याला पी लिया नाम का छोड़ जगत का मोह।
हमको सतगुरु ऐसे मिल गये, सहज मुक्ति गई होय॥
मैं तो उन संतो का दास . . .

नरसी जी के सतगुरु स्वामी, दिया अमिरस प्याय।
एक बून्द सागर में मिल गई, कहा करे यमराय॥
मैं तो उन संतो का दास . . .

बाजीगर की बजी रे बांसुरी

बाजीगर की बजी रे बांसुरी, मायापुर के मेले में।

बाजीगर ने खेल रचाया, माटी का कलबूत (शरीर) बनाया,
वाके भीतर आप समाया, ऐसो गुन अलबेले में॥
बाजीगर की बजी रे बांसुरी . . .

बिना चरन पृथ्वी पर डोले, बिन मुख रसना वांणी घोले।
बिना हाथ भूमण्डल तोले, ऐसो ज़ोर अकेले में॥
बाजीगर की बजी रे बांसुरी . . .

घट घट में पंछी बोलता

घट घट में पंछी बोलता जी।

आप ही माली आप बगीचा, आप ही कलियाँ तोड़ता जी॥
घट घट में पंछी बोलता . . .

आप ही डंडी आप तराज़ु, आप ही बैठा तोलता जी॥
घट घट में पंछी बोलता . . .

सब में सब बन आप समाये, जड़ चेतन में डोलता।
कहत कबीरा सुनो भई साधो, मन की हुंडी खोलता जी॥
घट घट में पंछी बोलता . . .

<u>जगत में राम नाम है सार</u>

जगत में राम नाम है सार।

सोच समझ नर देख पियारे, नश्वर सब संसार॥
जगत में राम नाम है सार . . .

राजा रानी पण्डत ज्ञानी, शूर वीर नर नार,
सब ही काल बली के मुख में, जाये बने आहार॥
जगत में राम नाम है सार . . .

सूरज तारे पर्वत सारे, सागर नीर अपार,
अंत समय में फिर नाही कोई, ये निश्चय मन धार॥
जगत में राम नाम है सार . . .

हरि का नाम सुमिर नित बन्दे, दिल से नही बिसार,
ब्रह्मानन्द कटे भव बन्धन, छुटे सकल विकार॥
जगत में राम नाम है सार . . .